

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 8, मैथ्यूज़ किंगडम एंड डिस्टिंक्टिव्स

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

ठीक है, चलो आगे बढ़ें और आगे बढ़ें। आइए प्रार्थना से शुरू करें और फिर हम मैथ्यू पर ध्यान केंद्रित करते हुए समाप्त करेंगे, हमने थोड़ा विस्तार से, कुछ अंशों को देखा है, मुख्य रूप से अध्याय 2, 3, और 4, यीशु को पूर्णता के रूप में चित्रित करते हैं इज़राइल की कहानी। हम अध्याय 5 से 7 पर थोड़ा गौर कर रहे हैं, यीशु की शिक्षा का पहला मुख्य खंड, प्रसिद्ध पहाड़ी उपदेश, और फिर हम उस पर तेजी से आगे बढ़ेंगे और फिर मैं संक्षेप में बताना चाहता हूँ मैथ्यू के बारे में क्या विशिष्ट है?

ऐसे कौन से विषय या विचार हैं जिन पर मैथ्यू जोर देता है कि या तो अन्य गॉस्पेल मैथ्यू के समान स्तर पर नहीं हैं या कम से कम नहीं हैं? मैथ्यू द्वारा यीशु के चित्रण में क्या विशिष्ट है? मैथ्यू अपने सुसमाचारों में यीशु को कैसे प्रस्तुत करता है? वह उसके बारे में किस बात पर जोर देता है? और फिर शायद मार्क की ओर भी बढ़ें, हालाँकि आप अपने क्लास नोट्स में देखेंगे कि मेरे पास कई भ्रमण हैं। वहाँ एक भ्रमण है जो एक प्रकार से खरगोश पथ जैसा है। हम इसके बारे में मैथ्यू में बात करेंगे।

मैं ईश्वर के राज्य के विषय के बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ, जो यीशु की शिक्षा का प्रमुख केंद्र बिंदु था। सभी सुसमाचारों में, जब यीशु उपदेश देना शुरू करते हैं, तो वे कहते हैं कि वह ईश्वर के राज्य का उपदेश और प्रचार करने आये थे। इसका क्या मतलब है? जब यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने आये तो वे क्या दे रहे थे? पाठकों और प्रथम श्रोताओं ने उसे कैसे समझा होगा? एक भ्रमण में, विषयांतर की तरह, हम ईश्वर के राज्य के बारे में थोड़ी बात करेंगे।

वह कहां से आता है? यीशु ने इसे यूँ ही नहीं बना दिया और इसे हवा से उठा नहीं लिया। वास्तव में इसके पीछे पुराने नियम का एक लंबा इतिहास है। इसलिए, हम उस पर बहुत संक्षेप में गौर करेंगे और फिर उम्मीद है कि हम मार्क की ओर भी बढ़ने में सक्षम होंगे।

ठीक है, आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें, और फिर हम वापस मैथ्यू के सुसमाचार की ओर मुड़ेंगे। पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मैथ्यू के सुसमाचार और अन्य नए नियम की पुस्तकों, जिन पर हम विचार करते हैं, के बारे में हमारी चर्चा और हमारी सोच का मार्गदर्शन करेंगे। भगवान, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप हमें उन्हें उनके मूल संदर्भ में अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करेंगे और इसलिए यह समझने में सक्षम होंगे कि वे आज भी आपके लोगों के लिए आपके शब्द के रूप में हमसे कैसे बात करते हैं। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

हमने मैथ्यू 5-7 में पहाड़ी उपदेश को देखा, जिसमें हमने कहा कि मैथ्यू की विशिष्ट विशेषताओं में से एक यह है कि मैथ्यू अपने सुसमाचार को विभाजित करता है या यीशु के पांच मुख्य प्रवचनों या शिक्षण खंडों के आसपास अपने सुसमाचार की संरचना करता है।

हम एक क्षण में उस पर लौटेंगे। पहले शिक्षण खंडों में से एक और शायद सबसे प्रसिद्ध, पर्वत पर उपदेश है, जिसे हम पर्वत पर उपदेश कहते हैं। हमने इस बारे में थोड़ी बात की है कि यीशु उसमें क्या कर रहा था।

माउंट पर उपदेश के आम विचारों में से एक है, और यह हमें उस आखिरी मुद्दे पर लाता है जिसके बारे में मैं उपदेश के संबंध में बात करना चाहता हूँ, यानी, क्या हमें धर्मोपदेश को कानून बनाम अनुग्रह के संदर्भ में समझना चाहिए? अर्थात्, ईसाई होने के नाते हम अक्सर कानून और मांग, यानी आज्ञाकारिता, के बीच एक तीव्र अंतर रखते हैं, कुछ ऐसा जो हम ईश्वर की कृपा के विपरीत करते हैं। यह कुछ ऐसा है जो ईश्वर हमें प्रदान करता है या देता है। तो, क्या पहाड़ी उपदेश पूरी तरह से कानून के बारे में है और पूरी तरह से भगवान की कृपा से रहित है? दोबारा, जब आप उपदेश पढ़ते हैं तो आपको उन चीज़ों की सूची मिलती है जो यीशु हमें बताना शुरू करते हैं।

तुमने सुना है कि कहा गया था, हत्या मत करो, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर कोई अपने दुश्मन से नफरत करता है, तो तुम दोषी हो जैसे कि तुमने हत्या की है और यह आगे बढ़ता है और तुम्हें आदेश देता है जो कुछ मामलों में वैसा ही होता है जैसा कोई पाता है पुराने नियम में। तो, कुछ ने जवाब दिया है, ठीक है, पहाड़ी उपदेश वास्तव में कानून के बारे में है और इसमें भगवान के प्रेम और उनकी कृपा का सुसमाचार बहुत कम है, और इसलिए लोगों ने संघर्ष किया है कि हम पहाड़ी उपदेश के साथ क्या करें जो एक लगता है यह काफी हद तक कानून की मांग की तरह है, कुछ हद तक इजराइल के कानून की तरह। और एक प्रतिक्रिया यह है कि, पर्वत पर उपदेश मुख्य रूप से हमें यह दिखाने के लिए है कि हम कमतर हैं।

तो, कानून एक मापने वाली छड़ी के रूप में है जो हमें दिखाता है कि हम माप नहीं सकते हैं और इसलिए यह हमें भगवान की कृपा की ओर ले जाता है। तो, पर्वत पर उपदेश का मुख्य कार्य हमें ईश्वर की कृपा की ओर संकेत करना और मसीह और ईश्वर की कृपा पर भरोसा करना है, न कि हमारी अपनी क्षमता पर क्योंकि कानून हमें दिखाता है कि हम माप नहीं सकते हैं और हम कर सकते हैं इसे मत रखो. और इसलिए, कानून मुख्य रूप से हमें यह दिखाने के लिए नहीं है कि ईश्वर क्या है, ईसाइयों को यह निर्देश देने के लिए कि कैसे जीना है, बल्कि यह हमारी असफलताओं और हमारे पापों को दिखाने के लिए है और इसलिए हमें यीशु मसीह की ओर इंगित करता है और खुद को ईश्वर की दया और उनकी कृपा के लिए समर्पित करता है। .

हालाँकि, मुझे विश्वास है कि माउंट पर उपदेश पढ़ने का यह गलत तरीका है। हाँ, एक अर्थ में, एक अर्थ में संपूर्ण धर्मग्रन्थ कभी-कभी यह प्रदर्शित करता है कि हम अपने आप में कम पड़ जाते हैं और अपने स्वयं के संसाधनों तथा अपने स्वयं के प्रयासों से हम आगे बढ़ने की आशा नहीं कर सकते हैं और हमें ईश्वर की कृपा पर भरोसा करने की आवश्यकता है और वह उस तरह का जीवन जीने में सक्षम है जैसा वह चाहता है। ईश्वर, अतीत में एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री के रूप में, ईश्वर वही देता है जो वह मांगता है।

लेकिन जब आप पहाड़ी उपदेश पढ़ते हैं, तो पहचानने वाली पहली बात यह है कि हमने उपदेश के संदर्भ में इसके बारे में थोड़ी बात की है, याद रखें कि पहाड़ी उपदेश राज्य पर यीशु की शिक्षा

के संदर्भ में आता है। अर्थात्, ईश्वर का राज्य, जिसे हम बाद में देखेंगे, लेकिन ईश्वर का राज्य या शासन या शासन पहले से ही एक वर्तमान वास्तविकता है जिसमें पुरुष और महिलाएं प्रवेश कर सकते हैं और भाग ले सकते हैं और यीशु मसीह को जवाब देने में अनुभव कर सकते हैं ताकि उपदेश पर्वत पर, सबसे पहले, यह मान लिया जाता है कि परमेश्वर का राज्य और उसका शासन आ गया है। तो, यह है, इन निर्देशों को संदर्भ में समझा जाना चाहिए, ये उन लोगों के लिए निर्देश हैं जिन्होंने यीशु मसीह का जवाब देकर भगवान के शासन और भगवान के शासन का अनुभव किया है।

अर्थात्, उन्होंने अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य और उसके शासन की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव किया है। हालाँकि, दूसरी बात यह है कि, जब यीशु आदेश देना शुरू करते हैं, उससे पहले, अगर हम उस शब्द का उपयोग करना चाहते हैं और भगवान के लोगों की एक निश्चित जीवनशैली की मांग करना चाहते हैं, अगर आपको याद है कि पहाड़ी उपदेश एक श्रृंखला के साथ शुरू होता है जिसे हमने अध्याय में बीटिट्यूड्स कहा है 5. तो, यीशु, इससे पहले कि वह कभी भी लॉन्च हो, मैं अपने लोगों से यही चाहता हूँ, वह यह कहकर शुरू करता है, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक मनाते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति मिलेगी।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। और उनमें से कई और भी हैं।

लेकिन मैं जिस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह यह बहुत दिलचस्प है कि यीशु इस तरह से शुरुआत करेंगे। इससे पहले कि वह कभी भी आदेशों पर पहुंचे, वह यह कहकर क्यों शुरू करेगा, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक मनाते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति मिलेगी।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं। यीशु ने इस तरह से शुरुआत क्यों की? यह समझना महत्वपूर्ण है जब मैथ्यू, यीशु के शब्दों को रिकॉर्ड करते हुए कहता है, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं, आत्मा में गरीब होने का विचार यह है कि कोई व्यक्ति ईश्वर के सामने आध्यात्मिक रूप से दरिद्र खड़ा होता है। यानी, यह किसी ऐसे व्यक्ति की तस्वीर है जो ईश्वर के सामने नैतिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से दिवालिया है।

उनके पास उसे देने के लिए बिल्कुल भी कुछ नहीं है। वे उसी तरह खड़े हैं जैसे जो शारीरिक रूप से गरीब है उसके पास भौतिक स्तर पर बिल्कुल भी संसाधन नहीं हैं। कोई व्यक्ति जो आध्यात्मिक रूप से गरीब है, वह ईश्वर के समक्ष अपने स्वयं के संसाधनों के दिवालियापन को पहचानता है।

और फिर यह दिलचस्प है, अगला है, धन्य हैं वे जो शोक मनाते हैं। अब, इसे पुराने नियम के संदर्भ के प्रकाश में समझना महत्वपूर्ण है। यदि आप पुराने नियम के कुछ पाठों के बारे में सोच सकते हैं, शायद कुछ जिन्हें आपने पुराने नियम की कक्षा में देखा था, तो आमतौर पर पुराने

नियम में शोक का संदर्भ क्या था? विशेषकर बहुत से भविष्यवक्ताओं ने अक्सर परमेश्वर के लोगों को शोक मनाने के लिए बुलाया।

क्यों? दूसरे शब्दों में, क्या यह सिर्फ एक सामान्य दुख है क्योंकि मुझे सताया जा रहा है या सिर्फ इसलिए कि मेरा जीवन, आप जानते हैं, मैं चारों ओर देखता हूँ और जीवन भयानक है या मैंने अपने प्रियजनों को खो दिया है और इसलिए जीवन उचित नहीं लगता है, इसलिए मैं शोक मनाता हूँ और रोता हूँ क्योंकि मैं दुखी हूँ। क्या यही है? पुराने नियम में, अक्सर शोक का संदर्भ क्या होता था? सही है, ईश्वर से अलगाव का एहसास. आप बिल्कुल सही कह रहे हैं.

और आमतौर पर इसका कारण क्या था? क्या? दोबारा कहना? अरे हाँ, इस्राएल की पापपूर्णता। तो शोक, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। शोक पापबुद्धि और उसके परिणामस्वरूप ईश्वर की उपस्थिति से अलगाव की प्रतिक्रिया थी।

इसलिए, जब भविष्यवक्ता इस्राएल को शोक मनाने के लिए बुलाते हैं, तो यह पाप के कारण शोक और पश्चाताप की प्रतिक्रिया होती है। तो, यहाँ शोक केवल सामान्य दुःख नहीं है। यहाँ शोक मनाने का आह्वान पापबुद्धि के कारण पश्चाताप करने का आह्वान है।

और फिर दिलचस्प बात यह है कि अगला, जो लोग धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, वे तृप्त हो जाएंगे। तो, आप इन सभी को एक साथ रखते हैं, पर्वत पर उपदेश किसी ऐसे व्यक्ति को मानता है जो भगवान के सामने अपने नैतिक दिवालियापन को पहचानता है, कि उनके पास कोई भी संसाधन, आध्यात्मिक संसाधन नहीं हैं। वे पाप के लिए शोक मनाते हैं और वे अपनी पापपूर्णता को पहचानते हैं और वे पश्चाताप और शोक में प्रतिक्रिया देते हैं।

परन्तु तब वे धर्म के भूखे और प्यासे हैं, और परमेश्वर उन्हें तृप्त करेगा। और फिर पर्वत पर उपदेश आता है। तो, पर्वत पर उपदेश किसी मांग या कानून से बहुत दूर है जो भगवान के लोगों पर थोपा गया है, इसका उद्देश्य केवल यह दिखाना है कि वे कम पड़ गए हैं, हालांकि यह ऐसा कर सकता है।

यह समाज की भलाई के लिए सिर्फ एक नैतिकता से कहीं अधिक है। इसके बजाय, यह वह नैतिकता है जिसकी मसीह उन लोगों से मांग करते हैं जिन्होंने परमेश्वर के राज्य की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव किया है। जो लोग अपने जीवन में ईश्वर के शासन में प्रवेश कर चुके हैं, उनके लिए पहाड़ी उपदेश दर्शाता है कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है।

फिर भी साथ ही, यह एक अनुस्मारक है कि जो लोग भगवान के शासन में प्रवेश कर चुके हैं वे वे हैं जो मानते हैं कि वे आध्यात्मिक रूप से दिवालिया हैं, कि उनके पास स्वयं के लिए कोई संसाधन नहीं हैं, वे शोक मनाते हैं क्योंकि वे पाप में कम पड़ जाते हैं, फिर भी वे भूखे और प्यासे हैं वह धार्मिकता जिसे यीशु ने पहाड़ी उपदेश में व्यक्त किया है। और जब वे ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें भर देता है। इसलिए, फिर से, पहाड़ी उपदेश केवल एक ऐसी मांग से बहुत दूर है जिसे पूरा करने की हमसे अपेक्षा की जाती है और यह दिखाया जाए कि हम कम हैं, बल्कि इसके बजाय, यह एक मांग है, बल्कि एक ऐसी मांग है जिसे ईश्वर प्रदान करता है।

ईश्वर उस मांग को पूरा करने की क्षमता प्रदान करता है। उस प्रकार की जीवनशैली की अपेक्षा उन लोगों से की जाती है जो परमेश्वर के राज्य से संबंधित होंगे और जो उसमें प्रवेश करेंगे। और हम आगे इस बारे में और अधिक बात करेंगे कि परमेश्वर के राज्य से हमारा क्या मतलब है।

इसलिए, जब आप माउंट पर उपदेश पढ़ते हैं, तो यह कोई आदर्श नैतिकता नहीं है जिसका पालन कोई भी नहीं कर सकता है। इसका उद्देश्य केवल हमें यह दिखाना नहीं है कि हम कमतर हैं, बल्कि इसके बजाय, यह परमेश्वर का खाका है कि उसके लोगों को कैसे रहना चाहिए जो उसके राज्य से संबंधित हैं। लेकिन यह उन लोगों को मानता है जो अपनी असमर्थता को पहचानते हैं, और इसके बजाय, वे धार्मिकता के भूखे और प्यासे होते हैं जिसे अंततः केवल भगवान ही प्रदान कर सकते हैं।

ठीक है। दरअसल, मैं सीधे अगले भाग पर जाना चाहता हूँ, जो कि महान आयोग है। हमने मैथ्यू के अंत में इसके बारे में थोड़ी बात की है।

और जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, महान आयोग के साथ, मूल रूप से महान आयोग इस तरह मैथ्यू के बाकी हिस्सों में फिट बैठता है। यदि मैथ्यू ने यीशु के बारे में अब तक जो कुछ भी कहा है, यदि यीशु वास्तव में दाऊद का पुत्र है, और वह वास्तव में ईश्वर का पुत्र, मसीहा और मसीहा है, और यदि मैथ्यू ने अन्यजातियों के बारे में जो कहा है वह भी सच है, यदि यीशु न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी मसीहा बनकर आए हैं, इसके बाद महान आयोग आता है। इसका तात्पर्य यह है कि यीशु तब कहेंगे, इसलिए, न केवल इस्राएल, बल्कि सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो, और उन्हें मूसा के कानून का पालन न करना सिखाओ। , परन्तु जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है।

तो अब यदि मैथ्यू ने यीशु के बारे में जो कुछ भी कहा है वह सही है, तो यह यीशु के अनुयायियों के लिए इस विश्वव्यापी मिशन में शामिल होने के लिए बाध्य है जो सभी देशों के शिष्यों को बनाता है, जो कि यीशु ने स्वयं पृथ्वी पर शुरू की गई बातों को पूरा करता है, अर्थात् खुद को मसीहाई राजा के रूप में प्रस्तुत करना है। पुराने नियम की पूर्ति में, लेकिन न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी। और हमने देखा कि इसीलिए यीशु, सुसमाचार की शुरुआत में, इसीलिए यीशु को न केवल दाऊद का पुत्र कहा गया, बल्कि इब्राहीम का पुत्र भी कहा गया, जिसके माध्यम से पृथ्वी के सभी राष्ट्र धन्य होंगे। अब इब्राहीम से किया गया वादा महान आयोग में पूरा हो गया है, जहां यीशु के अनुयायियों को सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए कहा गया है, ताकि उत्पत्ति 12 से इब्राहीम तक यह आशीर्वाद पहुंचाया जा सके जो सभी राष्ट्रों तक पहुंचेगा।

अब यह इस तथाकथित महान आयोग में यीशु और उनके अनुयायियों के माध्यम से पूरा हो गया है। तो, हमने अब तक जो देखा है, उसे देखते हुए, और फिर से, हमने मैथ्यू के कुछ मुख्य जोरों को देखा है, हमने कुछ अंशों को विस्तार से देखा है, मैथ्यू का उद्देश्य क्या प्रतीत होता है? मेरा मतलब है, मैथ्यू ने सबसे पहले बैठकर यह किताब क्यों लिखी? सबसे पहले, यह समझना महत्वपूर्ण है कि मैथ्यू, मैथ्यू का सुसमाचार है, हालांकि इसमें कुछ विवाद है, क्योंकि कठिनाई यह

है कि मैथ्यू कभी सामने नहीं आता है और हमें बताता है कि वह क्यों लिख रहा है। वह अपने पाठकों की पहचान नहीं करता।

तो, थोड़ी अटकलें हैं। मैथ्यू को पढ़ने और पहली सदी के बारे में हम क्या जान सकते हैं, यह जानने में हमें एक तरह से एक जासूस की भूमिका निभानी होगी। हम मैथ्यू ने ऐसा क्यों लिखा इसकी एक विश्वसनीय तस्वीर एक साथ रखने की कोशिश करते हैं।

सबसे अधिक संभावना है, मैथ्यू यहूदी ईसाइयों के लिए लिखा गया है। अर्थात्, वे लोग जो यहूदी धर्म, अपनी यहूदी विरासत से बाहर आए हैं, और अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की है। फिर भी, जब मैथ्यू लिखा गया था, इस समय, गैर-ईसाई यहूदियों और ईसाई यहूदियों के बीच इतना मजबूत विभाजन नहीं हुआ होगा, जिन्होंने डेविड के पुत्र के रूप में यीशु को मसीहा के रूप में विश्वास में जवाब दिया है, और जिन्होंने नहीं किया है।

फरीसियों और एस्सेन्स जैसे समूह, ऐसे बहुत से समूह जिन पर हमने गौर किया। इसलिए संभवतः इस बिंदु पर गैर-ईसाई यहूदियों और ईसाई यहूदियों के बीच कोई मजबूत विभाजन नहीं था। और इसलिए, ऐसा हो सकता है कि पहली शताब्दी में बहुत से ईसाई यहूदी अभी भी अपने यहूदी मित्रों और परिवारों के साथ यहूदी आराधनालय में पूजा करते होंगे, जबकि वे चर्च के साथ भी पूजा करते होंगे, यह नई चीज़ जिसे हम कहते हैं ईसाई धर्म।

लेकिन इस बिंदु पर, ईसाई धर्म अभी तक यहूदी धर्म से इतनी स्पष्ट रूप से भिन्न नहीं हो सका है। तो, इस बारे में सोचें। यदि आपके पास है, तो मैथ्यू के पाठक यहूदी ईसाई रहे होंगे जिनका अभी भी आराधनालय, गैर-ईसाई यहूदियों के साथ कुछ संपर्क था।

फिर भी, वहाँ एक प्रश्न था, एक प्रश्न था पहचान पर। याद रखें हमने कहा था कि पहली शताब्दी में पूछे जाने वाले प्रश्नों में से एक यह था कि, ईश्वर के लोग होने का क्या मतलब है? परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं? और, इसके बारे में इस तरह से सोचें। कुछ गैर-ईसाई यहूदियों ने सवाल उठाया होगा कि क्या ये यहूदी जिन्होंने अब यीशु मसीह के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की है और अब वे चर्च में भी पूजा कर रहे हैं, उन्होंने आश्चर्य किया होगा और विवाद करने की कोशिश की होगी कि क्या वे वास्तव में भगवान के लोग थे।

इसके अलावा, समस्या यह थी कि चर्च संभवतः अधिक से अधिक गैर-यहूदी होता जा रहा था। तो, हो सकता है कि इसने आग में और घी डाल दिया हो। तो, गैर-ईसाई यहूदी कह रहे हैं, तुम यहूदी जो यीशु मसीह में विश्वास करते हो और चर्च के साथ पूजा करते हो, तुम वास्तव में भगवान के लोग नहीं हो।

क्योंकि देखो, तुम भी अधिकाधिक अन्यजाति बनते जा रहे हो। और इसलिए, मैथ्यू कहां फिट बैठता है? मैथ्यू, मुझे लगता है कि मैथ्यू के लिखे जाने का एक मुख्य कारण, सबसे पहले, ईसाइयों, यहूदी ईसाइयों को यीशु मसीह में अपना विश्वास बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना है। लेकिन साथ ही, यह यह भी समझाता है कि चर्च अधिक से अधिक गैर-यहूदी क्यों बनता जा रहा है।

और यहीं से ये सारी कहानियाँ सामने आती हैं। बुद्धिमान लोगों को याद करें? मैथ्यू ने इन विदेशी ज्योतिषियों, इन अन्यजातियों को यीशु की पूजा करवाने के लिए क्यों प्रेरित किया? मैथ्यू ने यीशु से यह क्यों कहा, कि सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाओ? क्योंकि वह इन्हें याद दिला रहा है, मैथ्यू इन यहूदी ईसाइयों को याद दिला रहा है, जो एक तरह से अन्य यहूदियों के साथ विवाद में हैं, और शायद यीशु मसीह में उनके विश्वास के कारण उनकी आलोचना की जा रही है, और क्योंकि वे अधिक गैर-यहूदी बनने के कारण इस चर्च से संबंधित हैं। अब मैथ्यू यह कहने के लिए लिखता है, अच्छा देखो, क्या यीशु ने स्वयं अन्यजातियों को शामिल करने के लिए तैयारी नहीं की थी? तो, यह तथ्य कि चर्च अधिक से अधिक गैर-यहूदी है, आपको चौंकाना नहीं चाहिए।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप नाजायज हैं और आप वास्तव में भगवान के लोग नहीं हैं। तुम हो। यीशु ने स्वयं अन्यजातियों को शामिल करने का संकेत दिया और रास्ता बनाया।

तो, एक अर्थ में, मैथ्यू में अन्यजातियों पर यह जोर शायद मैथ्यू की माफी और क्षमायाचना की तरह है, यह दिखाने के लिए कि यीशु ने स्वयं सिखाया था कि चर्च गैर-यहूदी बन जाएगा। तो, यहूदी ईसाई यीशु मसीह में विश्वास बनाए रख सकते हैं। इसका उद्देश्य मसीह के प्रति शिष्यत्व और आज्ञाकारिता को प्रोत्साहित करना है, लेकिन यह, फिर से, शायद यहूदी ईसाइयों की आलोचना की जा रही है, या यहूदियों द्वारा उनकी पहचान पर सवाल उठाए जाने के जवाब में है, जो फिर से, इन ईसाई यहूदियों के बारे में सोच रहे हैं और वे क्यों बदल गए हैं यीशु मसीह, और चर्च इतना अन्यजाति क्यों बनता जा रहा है? ठीक है, मैथ्यू इसका उत्तर देता है, क्योंकि यीशु ने यही अनुमान लगाया था, क्योंकि यीशु ने सिखाया था कि चर्च बनेगा, और उसके अनुयायियों के समूह में अन्यजातियों को शामिल किया जाएगा।

तो, इसलिए, मैथ्यू यह समझाने के लिए लिखता है कि चर्च गैर-यहूदी क्यों बन रहा है, और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए, उन्हें अन्य गैर-ईसाई यहूदियों के साथ संघर्ष के बावजूद भी, यीशु मसीह का अनुसरण करने में शिष्यत्व और आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करना है। अब, क्यों, या क्या करता है, इसके प्रकाश में, मैथ्यू क्या करता है, मैथ्यू में कुछ अन्य महत्वपूर्ण विषय क्या हैं, मैथ्यू किस बात पर जोर देता है कि या तो अन्य गॉस्पेल नहीं करते हैं, या कम से कम उसी हद तक नहीं अन्य सुसमाचार करते हैं? अब, यह वह सब कुछ नहीं है जिस पर मैथ्यू जोर देता है। कुछ चीजें हैं जो मैथ्यू कहता है और उन पर जोर देता है जो अन्य गॉस्पेल करते हैं, और यह उतना ही महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं मुख्य रूप से उन प्रमुख विचारों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जिन पर मैथ्यू जोर देता है जिन पर आपको जोर नहीं मिलता है, या कम से कम उतना ही, अन्य सुसमाचारों में।

तो, सबसे पहले, मैथ्यू का यीशु। मैथ्यू के यीशु के चित्र की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, मैथ्यू यीशु को मसीह या मसीहा के रूप में चित्रित करता है। अर्थात्, यीशु को स्पष्ट रूप से मसीहा के रूप में चित्रित किया गया है, दाऊद की पंक्ति में, उन वादों को पूरा करने में जो परमेश्वर ने दाऊद से किए थे, जो पुराने नियम में 2 शमूएल 7 तक जाता है।

तो, 2 शमूएल 7 से शुरू करके, यह अपेक्षा भविष्यवक्ताओं तक जारी है, कि परमेश्वर दाऊद से किया गया अपना वादा निभाएगा, और दाऊद की संतानों में से एक सिंहासन पर बैठेगा और इसराइल पर, बल्कि पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा। मैथ्यू अब स्पष्ट करता है कि यीशु दाऊद का वादा किया हुआ पुत्र है। फिर, यही कारण है कि सुसमाचार यीशु मसीह, दाऊद के पुत्र, मसीहा, दाऊद के पुत्र, इब्राहीम के पुत्र से शुरू होता है।

तो, यीशु मसीह है, अर्थात्, मसीह से हमारा मतलब है कि यह नहीं है, कम से कम मैथ्यू में, यह यीशु का दूसरा नाम नहीं है। उसका पहला नाम यीशु है, उसका अंतिम नाम क्राइस्ट है। कम से कम मैथ्यू में, अधिकांश भाग के लिए, क्राइस्ट एक शीर्षक है जो इंगित करता है कि वह मसीहा है, वह डेविड का पुत्र है।

दूसरा, कई अद्वितीय स्थानों में यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में चित्रित किया गया है। संभवतः यह भी, ईश्वर का पुत्र शीर्षक संभवतः यह भी इंगित करता है कि यीशु मसीहा हैं, लेकिन यह पिता के साथ उनके अद्वितीय संबंध को भी इंगित करता है। यीशु परमेश्वर के सच्चे पुत्र हैं।

वह पिता के साथ एक अनोखे रिश्ते में खड़ा है, लेकिन शायद यह भी संकेत देता है कि वह मसीहा है। पूरे मैथ्यू में प्रमुख स्थानों पर, यीशु को पूरे मैथ्यू में ईश्वर के पुत्र के रूप में लेबल किया गया है, या संबोधित किया गया है। यीशु ने पुराने नियम को पूरा किया।

मुझे सिर्फ कानून के बारे में नहीं, बल्कि पूरे पुराने नियम के बारे में, बल्कि विशेष रूप से कानून के बारे में कहना चाहिए। याद रखें, मैथ्यू अध्याय 5, 17, जब यीशु कहते हैं, मैं कानून को खत्म करने के लिए नहीं, बल्कि उसे पूरा करने के लिए आया हूँ। मैथ्यू का मुख्य अर्थ यह नहीं है कि यीशु ने इसका पूरी तरह से पालन किया, हालाँकि उसने ऐसा किया।

मैथ्यू का मतलब यह है कि यीशु पूर्णता के रूप में आया था, यानी, कानून, कानून वास्तव में किस ओर बढ़ रहा था और इशारा कर रहा था और अनुमान लगा रहा था, अब अंततः यीशु मसीह के व्यक्तित्व के साथ पहुंच गया है। यीशु का अपना व्यक्तित्व और शिक्षा ही पुराने नियम के कानून और पूरे पुराने नियम का सच्चा लक्ष्य है। तो ऐसा क्यों है कि मैथ्यू को याद है कि हमने अध्याय 2 में देखा था कि यीशु को नए मूसा के रूप में चित्रित किया गया है?

उसे इज़राइल के रूप में चित्रित किया गया है। उसे यशायाह से लेकर दुनिया के सभी देशों के लिए प्रकाश के रूप में चित्रित किया गया है। मैथ्यू क्या कर रहा है? वह दिखा रहा है कि पुराने नियम के ये सभी पहलू यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपना चरमोत्कर्ष पाते हैं।

और उस अर्थ में, वह इसे पूरा करता है। इसलिए, मैथ्यू स्पष्ट करना चाहता है, और यही एक कारण है कि मैथ्यू नए नियम की इतनी उपयुक्त पहली पुस्तक है क्योंकि इसका पुराने नियम के साथ सबसे स्पष्ट संबंध है। क्योंकि मैथ्यू यह स्पष्ट करना चाहता है कि, फिर से, पुराना नियम एक अधूरी कहानी है।

और अब मैथ्यू का सुसमाचार यह दिखाकर कहानी समाप्त करता है कि यीशु अंतिम अध्याय और चरमोत्कर्ष और कहानी का निष्कर्ष और पूर्ति है और पुराने नियम में शुरू हुई सभी कहानियाँ हैं। तो इसीलिए यीशु दाऊद का पुत्र है। वह इब्राहीम का पुत्र है।

वह मूसा से भी महान है। वह नया इजराइल है। जहां इजराइल विफल हुआ, वहां यीशु अब सफल हुए।

वह योना से भी महान है। वह सुलैमान से भी महान है। बार-बार, मैथ्यू चाहता है कि आप इस बात को समझें कि यीशु चरमोत्कर्ष है और पुराने नियम की सभी कहानियों से बढ़कर है।

वे सभी मसीह के व्यक्तित्व में अपना निष्कर्ष और चरमोत्कर्ष पाते हैं। इसलिए, यीशु पुराने नियम के कानून को पूरा करता है, बल्कि पूरे पुराने नियम को भी पूरा करता है। हमने पहले ही देखा है कि यीशु को नए मूसा के रूप में चित्रित किया गया है।

कुछ विद्वान सोचते हैं, आप जानते हैं, ऐसा क्यों है कि यीशु हमेशा उपदेश देने के लिए पहाड़ पर जाते हैं? अध्याय 5 में पहाड़ी उपदेश में, यीशु एक पहाड़ पर चढ़ते हैं। ल्यूक यह नहीं कहता कि वह किसी पहाड़ पर गया था। इसका मतलब यह नहीं है कि उसने ऐसा नहीं किया, लेकिन मैथ्यू इसे स्पष्ट करता है।

महान आयोग, अध्याय के बिल्कुल अंत में, यीशु अपने शिष्यों को उनसे मिलने के लिए कहाँ कहते हैं? एक पहाड़ पर, जो ईश्वर के रहस्योद्घाटन, उसके कानून को प्राप्त करने के लिए सिनाई पर्वत पर जाने वाले मूसा को प्रतिबिंबित और याद कर सकता है, जिसे वह लोगों को देगा। तो, यीशु, मैथ्यू, यीशु को मूसा की तरह, लेकिन मूसा से महान के रूप में चित्रित करना चाहते हैं। हमने अध्याय 2 में देखा कि यीशु ने एक राजा से बचकर सभी बच्चों को मार डाला था।

इसलिए, मैथ्यू स्पष्ट रूप से यीशु को एक नए मूसा के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू यीशु को एक बुद्धिमान शिक्षक के रूप में भी प्रस्तुत करना चाहता है। याद रखें हमने कहा था कि मैथ्यू को प्रवचन के पाँच मुख्य खंडों में विभाजित किया गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू यीशु को एक शिक्षक के रूप में चित्रित करना चाहता है। और इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आप सुसमाचार के अंत तक पहुँचते हैं और यीशु फिर से कहते हैं, उन्हें बपतिस्मा देना और उन्हें वह सब करना सिखाना जो मैंने तुम्हें आदेश दिया है। और उसने उन्हें जिन चीज़ों की आज्ञा दी है वे मैथ्यू की पूरी किताब में शिक्षा के ये पाँच खंड होंगे।

मुझे लगता है कि यह आखिरी है। तो वो पांच हैं। फिर, ऐसी अन्य बातें भी हैं जो मैथ्यू यीशु के बारे में कहता है, लेकिन मैथ्यू के यीशु के चित्र में ये कुछ अलग तरह के जोर देते प्रतीत होते हैं।

और हम देखेंगे, तुलना करके, हम देखेंगे कि अन्य सुसमाचार लेखक यीशु को कैसे चित्रित करते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण विषय यह है कि हम पहले ही पुराने नियम की पूर्ति के बारे में थोड़ी बात

कर चुके हैं। फिर, मैथ्यू में यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो केवल प्रत्यक्ष भविष्यवाणियों का नहीं, बल्कि सभी पुराने नियम का चरमोत्कर्ष और पूर्ति है।

संभवतः हममें से अधिकांश जब हम नया नियम पढ़ते हैं, तो हम सोचते हैं कि यीशु पुराने नियम को पूरा करते हैं जबकि पुराना नियम उनके बारे में भविष्यवाणी करता है। लेकिन ऐसा नहीं है। यहां तक कि पुराने नियम के उन हिस्सों में भी जिनमें भविष्यवाणी नहीं की गई है, यीशु अभी भी उन्हें पूरा करते हैं।

क्योंकि फिर से, मैथ्यू, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रकाश में, मैथ्यू वापस जाता है और पुराने नियम को पढ़ता है और देखता है कि कैसे पुराने नियम के ये सभी तार और टुकड़े और हिस्से और हिस्से और व्यक्ति अंततः अपनी पुनरावृत्ति और चरमोत्कर्ष पाते हैं। यीशु मसीह का व्यक्ति। फिर, तो मैथ्यू कैसे कह सकता है कि यीशु कानून को पूरा करता है? कानून भविष्यवाणी नहीं था। इसने ईसा मसीह के आगमन की भविष्यवाणी नहीं की थी।

लेकिन साथ ही, पुराने नियम का कानून जिस सच्ची जीवन शैली और आदर्श की आशा कर रहा था और जिसे पाने की कोशिश कर रहा था, वह यीशु की शिक्षाओं और उनके जीवन में अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचता है। उस अर्थ में, यीशु को पुराने नियम को पूरा करते हुए देखा जा सकता है। जिसे पूरा करने से हमारा तात्पर्य केवल यह है कि यीशु ही वह लक्ष्य है जिसकी ओर पुराने नियम ने संकेत किया था।

ऐसे में फिर वह उसे पूरा भी करते हैं। तो, यीशु पुराने नियम को पूरा करते हैं। ईश्वर का राज्य और स्वर्ग का राज्य मैथ्यू की पुस्तक में एक और प्रमुख विषय है।

मैं अब इससे कुछ हद तक परे हूँ। हम बस एक क्षण में परमेश्वर के राज्य के बारे में थोड़ी बात करेंगे। लेकिन यीशु, विशेष रूप से मैथ्यू में, यीशु शुरुआत में ही परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते हुए आते हैं।

और हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि इसका क्या मतलब था? यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और परमेश्वर के राज्य की पेशकश करने क्यों आये? उनका इससे क्या मतलब था? उनके श्रोता क्या उम्मीद कर रहे होंगे? अंत में, शिष्यत्व का विषय। मैथ्यू की प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि यीशु तैयारी करते हैं और यीशु अपने अनुयायियों के एक समूह की आशा करते हैं और तैयारी करते हैं जो उनके मिशन को कायम रखेंगे। और यह महान आयोग के अंत में बहुत स्पष्ट है, जब वह अपने शिष्यों से कहता है कि वे सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाएं, उन्हें बपतिस्मा दें और उन्हें शिक्षा दें।

इसलिए, मैथ्यू ने यीशु को अनुयायियों के एक समूह के लिए तैयारी और प्रावधान करने के रूप में चित्रित किया है जो यीशु की आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देंगे और उनके मिशन को कायम रखेंगे। अब यह महसूस करना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि यहां जो चल रहा है वह यीशु है, शिष्यत्व के इस विषय के साथ और यीशु अनुयायियों के एक समूह के लिए प्रावधान कर रहा है जो आज्ञाकारिता में उसका अनुसरण करेंगे, जो कि शिष्यत्व का सार है, वह यीशु है यह पुनः परिभाषित कर रहा है कि परमेश्वर के लोग होने का क्या अर्थ है। फिर से, आप यीशु के आगमन और उनकी शिक्षाओं

और उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान तक के बारे में सोचें, पहली शताब्दी और उससे पहले के अधिकांश लोग कैसे होंगे, यह देखते हुए कि हमने कुछ ऐतिहासिक सामग्री पर जो देखा है, उससे पहले हमने निपटा था। सेमेस्टर, अधिकांश लोग क्या करेंगे, वे इस प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे, कि भगवान के लोगों से संबंधित होने का क्या मतलब है? संभवतः उन्होंने इसका उत्तर कैसे दिया होगा? और यदि उनसे पूछा भी जाता कि अनुयायी होने का क्या अर्थ है, मसीह का होने का क्या अर्थ है? अधिकांश लोग, विशेषकर यहूदी अनुयायी, उन्होंने उस प्रश्न का उत्तर कैसे दिया होगा? विशेष रूप से उन कुछ सर्वेक्षणों को देखते हुए, जिन पर हमने गौर किया है, पुराने नियम तक का इतिहास, राजनीति और संस्कृति।

हाँ, मूल रूप से एक यहूदी और मूसा के रूप में जीना। मूसा का कानून, जैसा कि हम बाद में पॉल के कुछ लेखों में देखने जा रहे हैं, मूसा का कानून अक्सर एक पहचान चिह्नक के रूप में कार्य करता था, एक सीमा जो आपको अन्य राष्ट्रों, अन्यजातियों से अलग करती थी, और आपको भगवान के लोगों के रूप में प्रतिष्ठित करती थी। तो, पहली शताब्दी में, यदि आपसे पूछा जाए, कि परमेश्वर के लोग होने का क्या अर्थ है? परमेश्वर के सच्चे लोग कौन थे? और होंगे भी कौन, यीशु के अनुयायी कौन थे? उनमें से अधिकांश ने उत्तर दिया होगा, कि यह वे लोग हैं जो मूसा के कानून का पालन करते हैं और जातीय रूप से यहूदी राष्ट्र के साथ पहचाने जाते हैं।

अब यीशु आते हैं, और इसे समझें, यही कारण है कि मैथ्यू यीशु को सच्चे इज़राइल के रूप में प्रस्तुत करता है। अब यीशु आते हैं और उसे पुनः परिभाषित करते हैं। चूँकि यीशु ही सच्चा इज़राइल है, वही एक है, फिर से, हम यीशु के बपतिस्मा और उसके प्रलोभन को देखते हैं, यीशु वास्तव में इज़राइल के इतिहास का पूर्वाभ्यास कर रहे थे।

सच्चे इज़राइल के रूप में, अब हम उस प्रश्न का उत्तर कैसे दें? परमेश्वर के लोगों और यीशु से संबंधित होने का मतलब बस यीशु को जवाब देना है। इसका मतलब है कि यह अब यहूदियों तक ही सीमित नहीं है। परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने का उत्तर अब कानून का पालन करने या यहूदियों के साथ पहचान बनाने से नहीं है।

अब यह केवल यीशु मसीह के संबंध में निर्धारित और परिभाषित है। तो फिर, पुराने नियम के यहूदी धर्म में, परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं? परमेश्वर के लोग होने का क्या मतलब है? मसीहा का अनुसरण करने का मतलब कानून का पालन करना और जातीय और शारीरिक रूप से यहूदी राष्ट्र से संबंधित होना है। अब यीशु सच्चे इज़राइल के रूप में, जिसने इज़राइल की नियति और पूरे पुराने नियम को पूरा किया है, अब वह इसे फिर से परिभाषित करता है।

अब हमें यह प्रश्न पूछना होगा कि परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने का क्या अर्थ है? मसीहा के सच्चे अनुयायी कौन हैं? अब वे लोग नहीं हैं जो कानून का पालन करते हैं या जो यहूदी हैं। अब यह कोई भी है जो सच्चे इस्राएली, सच्चे इस्राएल, यीशु मसीह के प्रति प्रतिक्रिया करता है। जो कोई भी अब यीशु के प्रति प्रतिक्रिया करता है वह परमेश्वर के सच्चे लोगों का है और सच्चा इज़राइल है।

इसलिए, यदि ऐसा मामला है, तो अन्यजाति भी, यहूदी और अन्यजाति दोनों, परमेश्वर के लोग बन सकते हैं। इसीलिए मैथ्यू ने यह दिखाने के लिए अन्यजातियों पर जोर दिया है कि यदि निर्णायक कारक अब यीशु मसीह है, तो अन्यजातियां यहूदियों के साथ समान स्तर पर भगवान के लोग बन सकते हैं क्योंकि अब यह कानून और अन्य यहूदी पहचान चिह्नों के आसपास केंद्रित नहीं है। अब यह यीशु मसीह में विश्वास के आसपास केंद्रित है।

इसलिए, अन्यजातियों को भी शामिल किया गया है। इसलिए, शिष्यों के इस प्रश्न को उठाकर, यीशु अनुयायियों के एक समूह के लिए प्रावधान करते हैं जो उनकी आज्ञाकारिता में जवाब देंगे और उस मिशन को आगे बढ़ाएंगे जो यीशु ने सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए शुरू किया था। लेकिन साथ ही, उन्होंने यह भी परिभाषित किया कि मसीह का शिष्य या अनुयायी क्या है और भगवान के लोगों से संबंधित होने का क्या मतलब है।

यह अब कानून और यहूदी विशेषाधिकारों और पहचान के आसपास केंद्रित नहीं है। यह ईसा मसीह के व्यक्तित्व पर केंद्रित है। और यह नए नियम में कई अन्य दस्तावेजों को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण हो जाएगा।

ठीक है। अब तक कोई प्रश्न? यह हमें मैथ्यू के अंत तक लाता है। मैं फिर से बात करना चाहता हूं।

आपके नोट्स में पहला भ्रमण ईश्वर का राज्य है, जिसे समझना बहुत महत्वपूर्ण अवधारणा है। वास्तव में, मैं आम तौर पर अपनी कक्षा से कहता हूं, यदि आप मेरी कही बाकी सभी बातें भूल जाते हैं, तो निश्चित रूप से आप ऐसा नहीं करेंगे, लेकिन यदि आप ऐसा करते हैं, तो आपको यह समझने की जरूरत है कि जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य की पेशकश की थी तो उसका क्या मतलब था, क्योंकि इससे मदद मिलेगी। आप न्यू टेस्टामेंट के शेष भाग का बहुत कुछ अर्थ समझते हैं। लेकिन मैथ्यू से संबंधित कोई भी प्रश्न जहां तक मसीह के चित्रण के प्रमुख विषय, वह मसीह को कैसे चित्रित करता है, पुराने नियम के साथ मसीह का संबंध, यीशु पर ध्यान, ईश्वर का राज्य, जिसके बारे में हम बात करेंगे क्षण, और फिर यीशु और शिष्यत्व।

ये कुछ प्रमुख विषय हैं। मैथ्यू के संबंध में अब तक कोई प्रश्न? तो, आप आश्चर्य हैं कि, मान लीजिए, एक परीक्षण या ऐसा कुछ, आप मैथ्यू के बारे में मेरे द्वारा पूछे गए किसी भी प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। मुझे लगता है आप शायद कर सकते हैं।

ठीक है। तो, आइए परमेश्वर के राज्य के बारे में थोड़ी बात करें। जब यीशु परमेश्वर के राज्य की पेशकश करने आये तो उनका क्या मतलब था? जब उस ने कहा, मन फिराओ, क्योंकि परमेश्वर का राज्य वा स्वर्ग का राज्य निकट है, वह निकट है।

यीशु क्या पेशकश कर रहे थे? और उनके पहले पाठक, मैथ्यू के पहले पाठक, और यीशु के श्रोता, क्या करेंगे जब उन्होंने पहली बार यीशु को उपदेश सुना होगा, उन्होंने क्या समझा होगा? यीशु राज्य की पेशकश क्यों कर रहे थे? वह पापों से मुक्ति प्रदान करने क्यों नहीं आया, जो उसने किया था? मेरा मतलब है, वह उन्हें पश्चाताप करने के लिए कहता है, लेकिन यीशु उपदेश देने, अपने पापों से पश्चाताप करने और विश्वास करने के लिए क्यों नहीं आए कि मैं आपके सभी पापों के लिए क्रूस पर मरने जा रहा हूं और आप बच जाएंगे और अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे? उसने

परमेश्वर के राज्य की पेशकश क्यों की? वह क्या पेशकश कर रहा था? खैर, इसे समझने के लिए, आपको थोड़ा पीछे जाना होगा, वास्तव में, बहुत दूर, वास्तव में, बाइबिल की सबसे पहली पुस्तक, उत्पत्ति की पुस्तक तक। यह परमेश्वर के राज्य को समझने के लिए एक प्रारंभिक बिंदु है।

और उस पर गौर करने से पहले कहने वाली पहली बात राज्य से है, जब मैं भगवान के राज्य के बारे में बात करता हूँ, या मैं नहीं, लेकिन जब यीशु भगवान के राज्य की पेशकश करते हैं, राज्य से, यीशु का मुख्य रूप से गतिशील शासन या शासन का मतलब है ईश्वर। यह परमेश्वर के शक्तिशाली शासन का संदर्भ है। यह किसी समयावधि या यूनाइटेड किंगडम जैसे भू-राजनीतिक क्षेत्र जैसे स्थान का संदर्भ नहीं है।

राज्य से, यीशु जो पेशकश कर रहे हैं जब वह ईश्वर का राज्य कहते हैं, तो उनका मतलब ईश्वर का शासन और शासन, ईश्वर का शक्तिशाली शासन और शासन है। यह एक गतिशील अवधारणा है, किसी निश्चित समयावधि या स्थान का संदर्भ नहीं। तो यह पहला प्रारंभिक बिंदु है, कि हम समझते हैं कि राज्य का अर्थ लोगों के जीवन में ईश्वर का सक्रिय शासन और शासन है।

अब, पुराने नियम की पृष्ठभूमि। फिर से, उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 पर वापस जाना महत्वपूर्ण है। और फिर मैं इसमें बहुत तेजी से आगे बढ़ने जा रहा हूँ। यह पुराने नियम का सर्वेक्षण पाठ्यक्रम नहीं है, और मुझे इसका एहसास है।

लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि वस्तुतः यीशु ने जो कुछ भी किया, विशेषकर मैथ्यू में, उसकी जड़ें पुराने नियम में हैं। और यह विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य के बारे में सच है। तो वापस ईडन गार्डन में।

उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 में, ईश्वर मानवता का निर्माण करता है। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया, इसके बारे में यह जो महत्वपूर्ण बातें कहती है उनमें से एक यह है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को क्यों बनाया। खैर, हमें एक संकेत मिलता है जब उत्पत्ति 1 कहता है, भगवान कहते हैं, आइए हम अपने स्वरूप में पुरुष और स्त्री की रचना करें, और उन्हें सृष्टि पर शासन करने दें। मानवता के लिए परमेश्वर का इरादा यह है कि वे शासन करेंगे, वे परमेश्वर के शासन का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मैं इसे उस छवि के रूप में लेता हूँ, हो सकता है कि आपने पुराने नियम में इसके बारे में बात की हो, छवि का मुख्य रूप से मतलब है कि मानवता को भगवान के शासन को प्रतिबिंबित करना था और पृथ्वी पर शासन करना था। इसलिए यह दिलचस्प है कि जब उत्पत्ति 1 और 2 में छवि का उल्लेख किया गया है, तो यह मानवता द्वारा पृथ्वी को अपने अधीन करने और उस पर शासन करने के संदर्भ में है। इसलिए, परमेश्वर ने मानवता को अपनी छवि में बनाया ताकि वे परमेश्वर के शासन के प्रतिनिधि बनें।

ईश्वर पृथ्वी का राजा है, लेकिन ईश्वर की छवि के रूप में मानवता को उस नियम को प्रतिबिंबित करना है, ईश्वर के शासन का प्रतिनिधित्व करना है, और पूरी पृथ्वी पर उसके शासन और महिमा

को फैलाना है। हालाँकि, जैसा कि कहानी आगे बढ़ती है, आदम और हव्वा ऐसा करने में असफल हो जाते हैं, और वे पाप करते हैं, और उन्हें ईडन गार्डन से निर्वासित कर दिया जाता है, और फिर बाकी बाइबिल, एक अर्थ में, एक कहानी है कि भगवान अपने मूल को कैसे पुनर्स्थापित करेंगे मानवता के लिए समस्त सृष्टि पर शासन करने, ईश्वर के प्रतिनिधि बनने, उसकी महिमा फैलाने और संपूर्ण पृथ्वी पर शासन करने का इरादा। खैर, अगला, अगर मैं आपके नोट्स में किंग डेविड को छोड़ सकूँ।

हम पहले ही उस वाचा के बारे में बात कर चुके हैं जो परमेश्वर ने दाऊद के साथ बनाई थी, कि परमेश्वर के पास कोई होगा जो दाऊद के सिंहासन पर हमेशा के लिए बैठेगा, कि दाऊद का सिंहासन शाश्वत और शाश्वत होगा। डेविड के साथ इस अनुबंध का कारण, मुझे विश्वास है, यही वह तरीका है जिससे ईश्वर मानवता के लिए पृथ्वी पर शासन करने के अपने इरादे को स्थापित और पुनर्स्थापित करने जा रहा है। वह दाऊद के राजा के द्वारा ऐसा करेगा।

तो, फिर, दाऊद से किया गया एक राजा का वादा सिर्फ कुछ ऐसा नहीं है कि, ओह, इज़राइल को एक राजा की आवश्यकता है, इसलिए भगवान एक वादा करेगा कि दाऊद की पंक्ति में हमेशा एक राजा होगा। यह मानवता के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा है, कि मानवता पूरी पृथ्वी पर शासन करेगी। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्होंने पाप किया।

तो अब जिस तरह से भगवान मानवता के शासन करने, भगवान की महिमा फैलाने और पूरी पृथ्वी पर शासन करने के अपने इरादे को बहाल करेंगे, वह डेविड के वंश से एक राजा, एक मसीहा को चुनना है, जो शासन करेगा और जो अंततः पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा। . तो, डेविडिक राजा, मसीहा, वह साधन है जिसके द्वारा भगवान उत्पत्ति 1 और 2 से अपने इरादे को पूरा करेंगे कि मानवता पूरी पृथ्वी पर शासन करेगी। अब, जैसा कि आप जानते हैं, समस्या यह थी कि इज़राइल, अपने पापों के कारण, इज़राइल और राजा ने अभी भी उस उद्देश्य को पूरा नहीं किया था।

वे पाप और मूर्तिपूजा में पड़ गये और उन्हें निर्वासित कर दिया गया। तो, हमने इसके बारे में थोड़ी बात की है। इस्राएल अपने पाप के कारण बेबीलोन और अशूर में बंधुआई में है।

और एक प्रश्न, एक समस्या यह है कि अब दाऊद के सिंहासन पर कोई पुत्र नहीं है। उन चीज़ों में से एक जिसके बारे में इस्राएली चिंतित थे या आश्चर्यचकित थे, कि दाऊद के राजा के बारे में परमेश्वर के वादों के बारे में क्या? क्योंकि यह राजा के माध्यम से था कि भगवान पूरी पृथ्वी पर शासन करने जा रहे थे और वह मानवता के लिए पूरी पृथ्वी पर शासन करने के अपने इरादे को बहाल करेंगे। तो, दाऊद के वंश में एक राजा की परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बारे में क्या? क्योंकि अब वे निर्वासन में हैं, वे एक विदेशी देश में हैं, सिंहासन पर कोई राजा नहीं है।

तो यहीं पर भविष्यवक्ता आते हैं। पुराने नियम के भविष्यवक्ता यशायाह, यहजकेल और यिर्मयाह एक ऐसे समय की आशा करते हैं जब परमेश्वर इस्राएलियों को उनकी भूमि पर वापस लौटा देगा और दाऊद के वंश का एक राजा उन पर शासन करेगा। तो फिर, यह सब उत्पत्ति 1 और 2 से

भगवान के इरादे का हिस्सा है, कि मानवता को सारी सृष्टि पर भगवान के शासन का शासन और प्रतिनिधित्व करना था।

अब परमेश्वर दाऊद के वंश के एक राजा के माध्यम से ऐसा करने जा रहा है। इसलिए, भविष्यवक्ता एक ऐसे समय की आशा करते हुए समाप्त होते हैं जब भगवान अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेंगे और उन पर शासन करने वाला एक राजा होगा जो अंततः उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति में पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा। अब, मैथ्यू के लिए तेजी से आगे बढ़ें, फिर क्या होता है यीशु का क्या मतलब है जब वह परमेश्वर के राज्य की पेशकश करने आता है? यहां डेविड की पंक्ति में लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा है जो न केवल इज़राइल पर शासन करेगा बल्कि मानवता को पूरी दुनिया पर शासन करने की नियति तक लाएगा। और इसलिए, जब यीशु परमेश्वर के राज्य की पेशकश करते हुए आते हैं, तो मुझे विश्वास हो जाता है कि वे यही उम्मीद कर रहे हैं, यहाँ वह वादा पूरा हो रहा है।

यहाँ डेविडिक राजा है जो हम पर शासन करेगा और पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा और मानवता को उसके इच्छित लक्ष्य और नियति तक ले जाएगा। अब इसके साथ एक तरह का अतिरिक्त घटक भी है। समस्या यह है कि सबसे अधिक संभावना है, फिर से दोबारा सोचने पर, और इससे हमें कुछ अन्य प्रश्नों का उत्तर देने में मदद मिलेगी जिन पर हम गौर करेंगे, वह यह है कि जब आप राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की हमारी चर्चा के बारे में सोचते हैं, तो लोग और क्या होंगे पहली सदी में सोच रहे थे जब उन्होंने सुना कि यीशु आकर कहते हैं, मन फिराओ क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट आया है? और जब उन्होंने सुना कि यह वह व्यक्ति है जो मसीह कहलाता है, दाऊद का पुत्र, तो लोग आम तौर पर क्या सोचेंगे? हाँ यह सही है।

हाँ, यही वह व्यक्ति है जो हमें रोम से मुक्त कराने जा रहा है। फिर, बहुत से यहूदी स्वयं को अभी भी पाप के कारण निर्वासन में मानते होंगे, और अब वे चारों ओर देखते हैं और सीज़र एक राजा और दाऊद के वंश के बजाय सिंहासन पर बैठा है। यहाँ सीज़र सिंहासन पर है।

रोम मूलतः आज की महाशक्ति है, जो हर चीज़ पर शासन करती है। और इसलिए अब यह व्यक्ति यह कहते हुए आता है कि परमेश्वर का राज्य निकट है, और इसके अलावा, उसे दाऊद का पुत्र करार दिया गया है। वे क्या सोचेंगे? यहाँ वह व्यक्ति है जो अंततः हमें रोमन साम्राज्य के चंगुल से छुड़ाएगा।

यहाँ वह है जो लोहे के राजदंड के साथ अपने शत्रुओं पर शासन करेगा, जो अपना राज्य स्थापित करेगा और हमें सारी सृष्टि में परमेश्वर के शासन और महिमा को फैलाने के हमारे इच्छित लक्ष्य तक ले जाएगा। और इसलिए, आप यह देखना शुरू कर सकते हैं कि क्यों, कम से कम शुरुआत में, यीशु कभी-कभी इतनी जल्दी बड़ी संख्या में अनुयायी इकट्ठा करने में सक्षम हो जाते थे, क्योंकि यह यहाँ है। हमने रोमन शासन के अधीन काम किया है।

और इतना ही नहीं, यदि आपको याद हो, उस दौरान केवल कुछ ही समय था, हमने हनुक्का अवकाश की जड़ों और विदेशी प्रभाव से मुक्ति की बहुत ही संक्षिप्त अवधि के बारे में थोड़ी बात की थी। उससे पहले और बाद में, यहूदी स्वयं को विदेशी दासता में पाते हैं। और अब यहाँ एक

व्यक्ति आता है जो लंबे समय से अपेक्षित डेविडिक शासन का वादा करता है जो लोगों को उनके दुश्मनों से मुक्त कर देगा।

तो फिर, आप देख सकते हैं कि इतने सारे लोग अक्सर यीशु के पास क्यों आते हैं, क्योंकि यहाँ वह व्यक्ति है जो ऐसा करने जा रहा है। समस्या यह है कि, एक ओर, जबकि यीशु ने स्पष्ट रूप से उस राज्य की पेशकश की थी, मैथ्यू और अन्य सुसमाचारों में भी यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने इसे उस तरीके से पेश नहीं किया जिसकी वे अपेक्षा कर रहे थे। वास्तव में, यहां यह पंक्ति दर्शाती है कि अधिकांश यहूदियों, यहूदी ईसाइयों ने क्या सोचा होगा, उनमें से बहुत से, अधिकांश यहूदियों ने क्या सोचा होगा, पुराने नियम में डूबे हुए, उन्होंने क्या सोचा होगा यानी वे इसमें रह रहे थे यह युग, यह वर्तमान युग, जो मूल रूप से बुराई और पाप और विदेशी प्रभाव और विदेशी उत्पीड़न पर हावी था।

इसलिए उन्होंने स्वयं को इस युग में रहते हुए देखा, और यह तीर परमेश्वर के राज्य के आगमन का प्रतिनिधित्व करता है, जो आने वाले युग का उद्घाटन करेगा। एक ऐसा युग जहां ईश्वर शासन करता है, फिर से, मूल रूप से उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति है, और 2 शमूएल और भविष्यवक्ताओं में आने वाले डेविडिक राजा का वादा है। तो, भगवान पृथ्वी पर आएं, और वह अपने मसीहा के माध्यम से, अपना राज्य स्थापित करेंगे और हमेशा के लिए शासन करेंगे।

फिर से, यशायाह अध्याय 9, प्रसिद्ध पाठ जिसे हम क्रिसमस पर उद्धृत करते हैं, यह पुत्र डेविड के वंश में होगा, और वह हमेशा के लिए शासन करेगा, उसके शासन का कोई अंत नहीं होगा। वह यहाँ आएगा, और फिर इस युग का अंत हो जाएगा, एक निर्णायक अंत, और भगवान का राज्य शांति और आशीर्वाद के एक नए युग की शुरुआत करेगा। परमेश्वर के राज्य का युग, जहां परमेश्वर शासन करेगा, और वह पृथ्वी पर शासन करेगा, और उसके लोग संपूर्ण पृथ्वी पर परमेश्वर के शासन का प्रतिनिधित्व करने की अपनी नियति को पूरा करेंगे।

तो, वे यही सोच रहे थे। इसलिए, जब यीशु राज्य की पेशकश करते हुए आते हैं, तो वे यही सोच रहे होते हैं। यह रहा।

यहाँ आने वाला युग है। मुझे नहीं पता कि वे हमेशा आवश्यक रूप से उस भाषा का उपयोग करते हैं या नहीं, लेकिन यह आने वाला युग है। यहां लंबे समय से प्रतीक्षित राज्य है जहां भगवान हमारे दुश्मनों को नष्ट कर देंगे और शांति और आशीर्वाद, और भगवान के शासन और एक नई रचना के इस युग का उद्घाटन और शुरुआत करेंगे।

तो, वे यही सोच रहे हैं कि ऐसा होने वाला है। हालाँकि, यीशु कुछ अलग सा काम कर रहे हैं। यीशु, हाँ, यीशु राज्य प्रदान करता है, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि यह दो किशतों में आने वाला है।

यह सब एक साथ नहीं आने वाला है। यह दो किशतों में आने वाला है। ओह, इसके लिए खेद है।

यह इस तरह दिखेगा. यह यीशु का प्रतिनिधित्व करता है. यह निचली रेखा इस युग का प्रतिनिधित्व करती है, और यह शीर्ष रेखा आने वाले युग, परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करती है।

अब जब यीशु आते हैं, तो यह क्रूस उनकी मृत्यु का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह उनके जीवन, उनकी मृत्यु और उनके पुनरुत्थान का भी प्रतिनिधित्व करता है। यीशु के आगमन, उसके जीवन और मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ, यीशु राज्य की पेशकश करता है, लेकिन आप देखेंगे कि यह इस युग को पूरी तरह से नष्ट नहीं करता है। यह युग निरंतर चलता रहता है।

यह इसे पूरी तरह से खत्म करके खत्म नहीं करता है। हाँ, यह पहले से ही यहाँ है। राज्य पहले ही आ चुका है।

आने वाला युग पहले ही आ चुका है। जब यीशु कहते हैं, पश्चात्ताप करो, राज्य यहाँ है। यह पहले ही आ चुका है, फिर भी यह इस तरह से आता है कि इस वर्तमान युग को मिटा नहीं पाता है, जिसमें पाप और बुराई का प्रभुत्व है, और रोम का प्रभुत्व है।

इसके बजाय, वह मसीह के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है, एक ऐसा समय जब मसीह वापस आएगा जहां वह परमेश्वर का राज्य लाएगा। वह इसे पूर्ण करेगा और इसे पूर्णता और पूर्णता में लाएगा। वह इस युग में बुराई को मिटा देगा, और वह अपना शाश्वत राज्य स्थापित करेगा जो सदैव बना रहेगा।

क्या हर कोई उसे देखता है? तो, जैसा कि विद्वान अक्सर कहते हैं, राज्य पहले से ही यहाँ है, आंशिक रूप से, भले ही यह अभी तक अपनी पूर्णता में यहाँ नहीं है। तो, पहले से ही या अभी तक नहीं की अवधारणा, कुछ लोग इसे उद्घाटन युगांतशास्त्र कहते हैं। यानी, यहूदियों ने सोचा था कि अंत समय का राज्य एक घटना में आएगा, यीशु अब दो घटनाओं में विभाजित हो गया है।

यह उसके प्रथम आगमन पर आंशिक रूप से आता है। इसीलिए जीसस कह सकते हैं, राज्य पहले से ही यहाँ है। पुरुष और महिलाएं अभी भगवान के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं।

पुरुष और महिलाएं अभी ही दाऊद के राजा, यीशु के माध्यम से परमेश्वर के शासन और शासन का अनुभव कर सकते हैं। फिर भी, यह उस तरह से नहीं आया है जो बुराई को पूरी तरह मिटा देता है, और परमेश्वर के शत्रुओं और इस्राएल के शत्रुओं को पूरी तरह मिटा देता है। यह उस तरह से नहीं आता है जो इस वर्तमान युग के अंत में पूरी तरह से एक नई रचना लाता है।

यह आंशिक रूप से आता है, उस दिन की प्रत्याशा में जब यह अपनी पूर्णता में आएगा। मैथ्यू को समझने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जब आप मैथ्यू को पढ़ते हैं, तो आपको दोनों दृष्टिकोण मिलते हैं। कभी-कभी, आप परमेश्वर के राज्य के बारे में पढ़ेंगे, और यह स्पष्ट है कि यह मौजूद है, यह पहले से ही यहाँ है।

लेकिन मैथ्यू में अन्य समय में, यीशु ईश्वर के राज्य के बारे में अभी भी भविष्य की बात करते हैं। यह दोनों कैसे हो सकते हैं? इससे यह स्पष्ट होता प्रतीत होता है। यह अंत समय का राज्य पहले ही वर्तमान में पहुँच चुका है।

हम अभी, मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से, पहले से ही परमेश्वर के भविष्य के राज्य का अनुभव कर सकते हैं। लेकिन, हम अभी तक इसकी पूर्णता और पूर्णता और पूर्णता का अनुभव नहीं कर पाए हैं। वह अभी भी भविष्य की प्रतीक्षा कर रहा है।

तो, यह पहले से ही यहाँ है, आंशिक रूप से, लेकिन यह अभी तक अपनी पूर्णता में नहीं आया है। तो, वह पहले से ही है, लेकिन अभी तक नहीं। कभी-कभी, लोग मज़ाक करते हैं कि अगर मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ, और आप पहले ही कहते हैं, लेकिन अभी नहीं, तो आप लगभग 80% समय में सही होंगे।

यह एक खिंचाव हो सकता है, लेकिन उस वाक्यांश में, यह मेरे लिए अद्वितीय नहीं है। यह राज्य के बारे में मैथ्यू के दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक सामान्य शब्द है। इसके बारे में कोई प्रश्न? वास्तव में, यह विचार पहले से ही है, लेकिन अभी तक नहीं।

तथ्य यह है कि राज्य पहले ही आ चुका है, आंशिक रूप से हम अब इसका अनुभव कर सकते हैं। लेकिन, अभी ऐसा नहीं है। यह अभी तक अपनी संपूर्णता और परिपूर्णता और पूर्णता में नहीं आया है।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक तक, शेष नए नियम को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यदि आप इसे समझते हैं और समझते हैं, तो आप नए नियम में कई अन्य स्थानों को समझने में सक्षम होंगे, जो पहली बार में काफी भ्रमित करने वाले प्रतीत होते हैं। कोई प्रश्न? मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि आपको यह मिले।

यह महत्वपूर्ण है। राज्य का यह विचार, परमेश्वर का शासन, दाऊद के वादों की पूर्ति में है। फिर, यहूदियों ने सोचा था कि यह एक निर्णायक कार्य में आएगा।

यीशु अब इसे दो कृत्यों में विभाजित करते हैं। उसके पहले आगमन पर राज्य का आगमन, जो आया, लेकिन केवल आंशिक रूप से। यह पहले से ही यहाँ था, लेकिन यह अभी तक अपनी पूर्णता में नहीं आया था।

जाहिर है, हम इसी दौर में जी रहे हैं। फिर, यह चार्ट हमें यह बताने के लिए नहीं है कि मैं कह सकता हूँ कि यह कहां है, हम उस रेखा के साथ कहां रहते हैं। इसका उद्देश्य केवल यह दिखाना है कि परमेश्वर के लोग वर्तमान दुष्ट युग के बीच रहते थे, अभी भी यहाँ है, फिर भी परमेश्वर का राज्य भी मौजूद है।

क्योंकि यीशु यही कर रहे थे। मैं दाऊद के माध्यम से वादा किए गए लंबे समय से प्रतीक्षित राज्य की पेशकश करने आया था। यह पहले से ही यहाँ है।

पुरुष और महिलाएं इसमें प्रवेश कर सकते हैं और भविष्य में आने वाली इसकी पूर्ण अभिव्यक्ति, इसकी परिणति से पहले ही इसका अनुभव कर सकते हैं। इसलिए, राज्य पहले से ही है, लेकिन यह अभी तक नहीं है। यह नहीं आया है।

इसे देखने का दूसरा तरीका यह है कि इस तीर का विस्तार किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, फिर से, आपने जो देखा वह एक शानदार घटना के रूप में सामने आ रहा है। अब यह दो अलग-अलग घटनाओं में बंट गया है।